Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

सांगलिया धूणी (सीकर) के संतो का इतिहास और सामाजिक क्षेत्र में योगदान का अध्ययन

सन्दीप कुमार बाबल*

* सहायक आचार्य (इतिहास) राजकीय महाविद्यालय, आहोर (जालोर) (राज.) भारत

शोध सारांश – संतो की महिमा अपरंपार है। संत परमार्थ का कार्य करके समाज को नई दिशा देते हैं। परमार्थ का अर्थ है कि संत सज्जन व्यक्ति का पर्याय है जो कि दूसरों की भलाई के लिए अपना जीवन समर्पित कर देता है।साधु और संत अपने अलख निरंजन को प्राप्त करने के लिए साधनाएं और तपस्या करते हैं और इनसे प्राप्त शक्तियों से सामाजिक उत्थान और परोपकार का कार्य भी करते हैं।

मत्स्यपुराण के अनुसार, 'ब्राह्मण ग्रन्थ और वेदों के शब्द, ये देवताओं की निर्देशक मूर्तियां हैं, जिनके अंत: करण में इनके और ब्रह्म का संयोग बना रहता है, वह संत कहलाते हैं।

अर्द्ध ऋचौ: उक्थानाम् रूपम् पदै: आप्नोति निविद:।
प्रणवै: शस्त्राणाम् रूपम् पयसा सोम: आप्यते।[1]

अर्थात् जो संत वेदों के अर्ध वाक्यों को पूरा करता है, आंशिक वाक्यों को स्रोतों के रूप में प्राप्त करता है, जैसे शस्त्रों को चलाना जानने वाला उनका पूर्ण रूप से प्रयोग करता है ऐसे ही पूर्ण संत सत्य को समझकर सोमरस (दिव्य ज्ञान) प्राप्त करते हैं।

साधु चरित सुभ चरित कपासु। नीरस बिसद गुनमय फल जासु।
जो सही दु:ख पर परछिद्रा दुरावा। बन्दनीय जेहि जग जस पावा।।[2]

मलिक मुहम्मद जायसी भी अपने पद्मावत काव्य में ईश्वर के स्वरूप का वर्णन करते हैं

अलख अरूप अबरन सो कर्ता, वह सब सो सब ओहि सो बरता।
प्रगट गुपत सो सरब बियापी, धरमी चिन्ह चिन्ह नहीं पापी।।[3]

अर्थात् वह सृष्टिकर्ता किसी से लिखा नहीं जाता, वह रूप, रंग से रहित है। वह सब में व्यवहार कर रहा है। वह प्रकट या गुप्त सब में समाया है, केवल धर्मात्मा उसे पहचानते सकते है, पापी व्यक्ति नहीं।

शब्द कुंजी – परमार्थ, ब्रह्म, साधक, धूणी, संगत, सत्संग, सतगुरू, पीठाधीश्वर, समाधि, सतलोक, अलख।

प्रस्तावना – सांगलिया धूणी भारत के राजस्थान राज्य के सीकर जिले में स्थित गांव सांगलिया में स्थित है। सांगलिया धूणी के संतो की ख्याति जग में प्रसिद्ध हो चुकी है। इस धूणी के संतों बाबा लक्कड़दास, बाबा खींवादास, बाबा ओमदास के सामाजिक सुधारों और सांस्कृतिक जागरण ने इस स्थान को वो महता दिलवाई है जोकि कलयुग के कठिन समय में जीवन से परेशान, बीमारी से ग्रसित, तनाव से भरे हुए लोगो के लिए संजीवनी बन चुका है। यहाँ आने वाला साधक, भक्त, दु:खी, याचक, श्रद्धालु सभी को आत्मिक सुख की प्राप्ति होती है और सभी सांसारिक कष्टों से मुक्ति मिल जाती है। सांगलिया धूणी की शाखाएँ भी फैली हुई हैं जैसे अड़कसर, मावा, रूल्याणी, मुकुंदगढ़, सीकर आदि भी प्रसिद्ध है।

सांगलिया धूणी की स्थापना और इतिहास– सांगलिया ग्राम राजस्थान राज्य के सीकर जिले में स्थित है। यहां किसी वक्त सांगा बाबा आए थे इनके नाम से ही गांव का नाम सांगलिया पड़ा।अखिल भारतीय सांगलिया धूणी संपूर्ण भारतवर्ष में एक प्रसिद्ध धार्मिक और ऐतिहासिक स्थल है। ये स्थान अपनी आध्यात्मिकता और धार्मिक, सामाजिक क्रियाकलापों के लिए विश्वविख्यात है।इस स्थान की स्थापना बाबा लक्कड़दास जी महाराज ने आज से लगभग 350वर्ष पूर्व की थी। इन्होंने धूणी माता की स्थापना की और इस स्थल को अपना साधना और तपस्या का केंद्र बनाया। लक्कड़ दास जी के लिए दोहा भी प्रचलित है।

आदु धाम धन्या की दरगा, सांगलयो है गांव।
सायब एक शकल में व्यापे , लक्कड़ स्वामी नाँव।।

यहां पर साधक और भक्त अपनी आस्था और मनोकामना पूर्ति हेतु आते रहते हैं।

सांगलिया धूणी के संतो का परिचय–सांगलिया धूणी के प्रमुख प्रसिद्ध संतों का संक्षिप्त विवरण एवं परिचय निम्नलिखित है –

1. **लक्कड़दास जी महाराज –** जनश्रुतियों के अनुसार बाबा लक्कड़ दास जी महाराज ने यहां गांव सांगलिया में आज से 300वर्ष पूर्व अपनी समाधि लगाई थी। ऐसी मान्यता है कि ये फतेहपुर (सीकर) के सिकलीगर परिवार से थे। घूमते घूमते इनको पंजाब के अबोहर स्थान पर एक साधु मिले जो कई वर्षों से तपस्या में लीन थे। ये इनके सामने हाथ जोड़के खड़े हो गए और जब साधु बाबा ने आंखे खोली तो बोले कि मुझे भी कुछ देवो। तब इस बाबा ने अपनी धूणी से कुछ अग्नि उठाई और इनको देदी। इन्होंने अपनी शक्ति से

इसे ऐसे बांधा लिया जैसे कोई प्रसाद ग्रहण करता है। ये इसे सांगलिया गांव में लेकर आए और स्थापित की। जो धूणी माता के नाम से प्रसिद्ध है। ये अघोरी थे तो लोग इनसे डरते थे।अघोरी साधु गुरू और शिष्य की अवस्था को सार्वभौमिक मानते थे। उनका मानना होता है कि सभी मनुष्य जन्मजात अघोरी होते हैं।[4]अघोरी साधु देवी के सामने असाधारण करतब करते थे।[5]इनके 7 शिष्य थे जिन्होंने अलग अलग जगह जाकर लोगों की सेवा की।

2. **गुलाब दास जी महाराज –** आपका जन्म बिडौली (सीकर) में हुआ था। ये जांगिड परिवार से थे। लोगो की दंत कथा और बिठुड़ा के मेघदास जी महाराज के अनुसार ये पहले लड़की थे। फिर जब घरवाले इनकी शादी करने लगे तो ये भागकर लक्कड़दास जी के पास पहुंचे और बोले कि महाराज मुझे शादी नहीं करनी। तो लक्कड़दास जी ने इन्हें एक चादर ओढ़ा दी। जब घरवाले इन्हें ढूंढने आए तो महाराज बोले कि यहां तो गुलाबदास जरूर है, गुलाब बाई नहीं तो इनके घरवालों ने जब चादर उतारी तो सच में इनके दाढ़ी मूंछें आई हुई थी। तब से इन्होंने गुलाब दास जी के नाम से संत बन गए। फिर इनको महाराज ने सीकर भेज दिया जहां गुलाबदास जी की बगीची आज भी है।

3. **मंगलदास जी महाराज –** इनका जन्म डीडवाना जिले के फोगड़ी गांव में अमरसिंह जी और लाड़ कंवर के घर हुआ। इनकी माताजी साधुओं की सेवा में रहती थी और संगत करती थी। ये कम उम्र में ही जोधापुर दरबार की सेवा में लग गए। वहां इन्हें किसी बात पर बोल दिया कि इनकी माता जी तो साधुओं के साथ रहती है आप राजपूत हो। ये बात सुनकर इनको गुस्सा आया और ये घोड़े पर सवार होकर अपनी माता को मारने चले। जब घर पहुंचे तो देखा कि मां को तो पहले ही किसी ने मार दिया है। जब वे मुड़ने लगे तो इनकी माताजी जीवित इनके सामने खड़ी थी। तब इन्होंने अपनी माता के पैर पकड़ लिए और सांगलिया आकर भक्त बन गए।

4. **मीठारामजी महाराज –** इनका जन्म लोसल (सीकर) के पास स्थित भीराना गांव में हुआ था। ये लक्कड़दास जी के ही शिष्य थे। इन्होंने पशु और पक्षियों की विशेष सेवा की। पशु पक्षियों की सेवा को बड़ा पुण्य वाला माना गया है।

'चाल सखी सत्संग में चाला, सत्संग में सतगुरू आसी।
सतगुरु शरण होज्या दीवानी, नहीं तो परले बह ज्यासी।।'

5. **दुलादास जी –** इनका जन्म सांगलिया गांव में ही जांगिड़ परिवार में हुआ था। 20साल की उम्र में ही मिठाराम जी के शिष्य बन गए थे। इनकी सत्संग और भजनों में रुचि थी। ये बाद में पीठाधीश्वर भी बने।

6. **रामदास जी –** इनका जन्म नवलगढ़ (झुंझुनू) के सोतवारा के जोगी परिवार में हुआ था। एकबार जंगल में इन्हें एक शेर मिल गया और उसने आप पर हमला कर दिया तो आपने उसे तलवार के एक ही वार से मार दिया। आप भी सांगलिया पीठ पर सुशोभित रहे। इनकी समाधि नवलगढ़ में स्थित है।

7. **मानदास जी –** इनका जन्म मेहरौली गांव (सीकर) के राजपूत परिवार में हुए। आप बचपन से आध्यात्मिक प्रवृत्ति के थे । आपने ठाठ बाट को ठोकर मारकर साधु जीवन अपना लिया। सांगलिया आकर रामदास जी के परम शिष्य बन गए। आप पीठाधीश्वर भी बने और दीन दुखियों की सेवा की।

8. **लादू दास जी –** इनके पिताजी का जन्म डीडवाना जिले के मकराना में स्थित अमरसर गांव में हुआ। बाद में ये कुंडल की ढाणी, सीकर में रहने लगे। लादूदास जी महाराज, मानदास जी के शिष्य बन गए। बाद में ये सांगलिया धूणी के पीठाधीश्वर भी बने। इनकी बाबा खींवादास जी पर विशेष कृपा रही। आपका देवलोकगमन 6 फरवरी 1966 ई. रविवार के दिन हुआ। आपने अंग्रेजो के जमाने में प्राथमिक विद्यालय, 4कुंए और अस्पताल भी बनवाया।

9. **मौजीदास जी महाराज**

आपका जन्म डीडवाना जिले के खाखोली गांव में त्रिलोकचंद जी और दल्लू देवी की कोख से विक्रम संवत् 1958 ई. भाद्रपद शुक्ल पक्ष 13 को हुआ था। आपके बचपन का नाम हीरालाल था। बाल्यकाल में ही आपकी शादी दौलतपुरा गांव में हो गई थी।आपकी मनमौजी प्रवृत्ति के कारण मौजीदास जी आपका नाम पड़ा। बाद में वैराग्य की चरम सीमा पर उन्हें सांगलिया आकर मान दास जी के शिष्य बन गए। कहते हैं कि गुरु को योग्य शिष्य मिल जाए तो गुरु की महिमा बढ़ जाती है।गुरू के आशीर्वाद से शिष्य का यश और तेजस्वी शिष्यों से गुरू का यश बढ़ता है।[6]अपने जीवन में आपने हजारों पर्चे दिए और लोगों की सेवा की। आपने अल्प समय के लिए सांगलिया पीठ के अधिाश्वर भी रहे बाद में आपने सांगलिया के समीपवर्ती गांव अड़कसर में अपनी तपोभूमि स्थापित की।

10. **खींवा दास जी**

आपका जन्म डीडवाना जिले के लाडनूं में बिठूडा में भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा 1939 ई. को हुआ। ये खुमाराम और चौथी देवी की संतान थे। इनके पिताजी खुमाराम बिदावत पहले से ही सांगलिया धूणी से जुड़े थे। ये लादू दास जी को कोई प्रिय वस्तु भेंट करना चाहते थे। इन्होंने अपने पुत्र खींव को ही इन्हें समर्पित करदिया। ये ही बालक फिर बाबा खींवा दास जी बने।ये अच्छे भजन गया करते थे। ये पाखंडवाद, अंधविश्वास के विरोधी थे। इन्हें 1998ई. में अम्बेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला। इन्होंने सांगलिया में प्रयास करके महाविद्यालय भी खुलवाया। इन्होंने गरीब लोगों की आर्थिक मदद भी की। 12 अगस्त 2001ई. को ये पुण्य आत्मा हमेशा के लिए हमें छोड़कर चली गई।

11. भगतदास जी – आपका जन्म पंचलगी गांव, नीम का थाना, सीकर में हुआ था। श्री मुखरामजी मेघवाल और श्रीमती नाथी देवी के घर इनका जन्म हुआ था। 14वर्ष की आयु में ही इन्होंने गृह त्याग करके सांगलिया आ गए और साधु बन गए। आपके पिताजी का चंडीगढ़ में कुश्ती अखाड़ा था।

महाराज शंकरदास जी एकबार वहां गए तो ये इनके साथ आ गए। ये बाबा खींवादास जी के परम शिष्य बन गए। पशु सेवा और जन सेवा इनका मूल मंत्र था। 12अगस्त 2001ई. को बाबा खींवादास जी के देवलोकगमन होने के बाद पीठाधीश्वर बने। इन्हें भजन गायन का बड़ा शौक था। 4फरवरी 2004ई. को ये ब्रह्मलीन हो गए और 5फरवरी 2004ई. को इनको समाधि दी गई। 2018में इनकी मूर्ति भी सांगलिया धूणी में लगाई गई है।

12. बंशीदास जी

इनका जन्म लांपवा (सीकर) में हुआ था। इनके पिता का नाम घासीराम जी बरवड़ और ग्यारसी देवी के घर हुआ था। 18 वर्ष की आयु में ही आप सांगलिया आकर बाबा खींव के शिष्य बन गए। ये प्रसिद्ध भजन गायक बने। बाबा खींव की प्रेरणा से ये दिन दुखियों की सेवा करने लगे और सत्संग करने लगे। ये भी धूणी के पीठाधीश्वर बने। इन्होंने लाखों लोगों का दु:ख दर्द दूर किया। सांगलिया महाविद्यालय को इन्होंने स्नातकोत्तर का दर्जा दिलवाया। बाबा लक्कड़दास जी आश्रम और महाविद्यालय के बीच में विश्राम गृह भी बनवाया।

13. ओमदास जी

इनका जन्म डीडवाना जिले के बरड़वा गांव में 11नवंबर 1991ई. को नारायणराम जी मेहरड़ा और श्रीमती यशोदा देवी के घर हुआ था। छ: भाई बहनों में दूसरे स्थान पर होने के कारण लाड प्यार से आपका पालन हुआ। इनके पिताजी राजकीय सेवा में होने से घर से बाहर इनका बचपन बीता। आपकी प्रारंभिक शिक्षा मौलासर (डीडवाना) में हुई। सांगलिया, जोधपुर, बरड़वा, सुद्रासन और बेरी से कक्षा 12 तक आपने शिक्षा प्राप्त की। 2015–16ई.में ही आपने सांगलिया महाविद्यालय से स्नातक परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण कर नाम रोशन किया।

बाबा बंशीदास जी के आप प्रिय शिष्य बने। 2001 ई. से ही आपने यहां आने वाले यात्रियों की सेवा, पशु सेवाया अन्य सेवा करके बंसीदास जी के साथ साए की तरह रहे। इनकी योग्यता और सेवा भावना को देखते हुए संपूर्ण ग्रामवासियों ने फरवरी 2017 ई. को आपको सांगलिया धूणी के पीठाधीश्वर पद पर विराजमान किया।आपने बामणी तलाई से अड़कसर तक सड़क बनवाई। आपने जून 2018ई. को स्नातकोत्तर महाविद्यालय में विज्ञान संकाय खुलवाकर शिक्षा जगत में नई दिशा दी है। इन्होंने पूर्व के संतो की समाधियों पर मीनाकारी कार्य भी करवाया है। इन्होंने 29 और 31 जुलाई 2018ई. को नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर लगाकर इन्होंने दिन दुखियों की सेवा की है । 13मार्च 2020ई.को इन्होंने ओमान, शारजाह, आबू धाबी की यात्रा की और जनजागरण किया।[7]

ओमदास जी महाराज कहते हैं कि दया ही धर्म का मूल है, प्रत्येक प्राणी की सेवा की जिम्मेदारी हमारी है।

ओम कहे संसार में सांचा सतगुरु देव।
तन मन धान भेंट करूं करो गुराँ की सेव।।
ओम कहे संसार में तिरन सत्संग नाव।
बैठ चलो सतलोक में जम का लगे न डाव।।[8]
सांगलपति महाराज को बारंबार प्रणाम।
शरण आए संकट कटे, पूरण हो सब काम।

सतगुरू अर्थात एक सच्चा गुरू वह है जो। अपने दर्शन, स्पर्श या निर्देशों से शिष्य के शरीर में आनंदमय अनुभूति उत्पन्न कर सके।[9]

सांगलिया धूणी का सामाजिक योगदान– सांगलिया धूणी पर पहले लोग जाने से डरते थे। बाबा खींवा दास जी ने सत्संग करके लोगों का डर दूर भगाया। बाबा खिंवादास जी ने लोगों को अपने श्री वचनों से लाभान्वित

किया। लोगों की देश विदेश में आस्था फैली। संपूर्ण भारत में इसकी शाखाएं हैं।साहेब के दरबार में कमी काहे की नाय।

जैसी तेरी भावना, वैसा ही फल पाय।।

यहां पीठाधीश्वर जी खुद ही लोगों से मिलते है, उनके दुख दर्द बांटते हैं। कोई मधयस्थ की आवश्यकता नहीं होती है। यहां असाधय रोगों, बांझपन, जादू टोने के शिकार लोग, सामाजिक बहिष्कृत लोग, पारिवारिक तनाव आदि सभी समस्याओं का समाधान हो जाता है। 1945-46 ई. में ग्राम सांगलिया में बाबा लादू दास जी के सानिध्य में प्राथमिक विद्यालय खोला गया जिसको बाबा खिंवादास जी में उच्च प्राथमिक, बाबा बंशीदास जी ने उच्च माध्यमिक में क्रमोन्नत करवाकर शिक्षा की अलख जगाई। इसी क्रम में बाबा खिंवादास जी ने महाविद्यालय की नींव भी रखवाई। जिसको बाबा बंशी दास जी ने पीजी तक क्रमोन्नत करवाकर ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा क्रांति ला दी। जिस समय आसपास दूर दूर तक कोई महाविद्यालय नहीं था तब इन्होंने ये उल्लेखनीय कार्य किया।

ज्ञान को दान कियो जग माही, सब दानों के हितकारी।
दीन हीन दुखियों के दाता, ऐसा पर उपकारी।।

इसके अलावा गौशाला, चिकित्सालय, प्याऊ, धर्मशाला आदि भी बनाए गए हैं।

29 और 31 जुलाई 2018 को नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन करके परमार्थी कार्य किया गया। सांगलिया धूणी के वर्तमान पीठाधीश्वर श्री ओमदास जी महाराज के शिष्य किशोर दास के द्धारा तीस हजार किलोमीटर लंबी भारत भूमि नमन यात्रा की जाएगी जिसके द्धारा सामाजिक समरसता का संदेश पूरे भारत वर्ष में दिया जाएगा।इस प्रकार शिक्षा, चिकित्सा, सामाजिक बुराइयों का उन्मूलन, जातिगत भेदभाव, छुआछूत, अन्याय के विरुद्ध इस धूणी के संतो ने उल्लेखनीय कार्य कर संपूर्ण समाज की सेवा की है।

निष्कर्ष- इस समय हमारे समाज को सामाजिक कुरीतियों और बुराइयों से लड़ने के लिए जो हिम्मत और विश्वास चाहिए, वो इस सांगलिया धूणी के संतो ने हमें उपलब्ध करवाया है। प्रत्येक मनुष्य इनके बताए गए सद्मार्ग से परम तत्व को प्राप्त कर सकता है। सत्संग और सतगुरू की महिमा का इन्होंने वास्तविक रूप में प्रयोग किया है।सत्संगति की महिमा तो सब जगह उपयुक्त मानी गई है।

नीतिशतक में भर्तृहरि जी भी कहते हैं कि '(हे मित्र!)कहिए सत्संगति मनुष्यों को कौनसा उत्तम फल नहीं देती।'

कथयसज्जनसमागम: पुसां की श्रेयो न करोती।[10]

सामाजिक सेवा के महत्ती कार्य करके ये दिखा दिया है कि सच्चे संत लोकसेवक भी होते हैं। संपूर्ण मानवता इनके सत्कर्मों की ऋणी रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. यजुर्वेद ,अध्याय 19, मंत्र 25
2. पोद्दार, हनुमानप्रसाद,(2014)श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदास विरचित रामचरितमानस,बालकाण्ड, श्लोक सं.3,गीता प्रेस, गोरखपुर,पृष्ठ संख्या- 20
3. जायसी, मलिक मुहम्मद (संपादक आचार्य रामचंद्र शुक्ल,2007), लोक भारती प्रकाशन।
4. बैरेट, ए.बी., रोनाल्ड एल. (2008) परिचय, अघोर चिकित्सा : उत्तरी भारत में प्रदूषण, मृत्यु और उपचार , बर्कले: कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, पृष्ठ संख्या (1- 28)
5. विल्सन, एच. एच.(1861ई.)हिंदू धर्म के धार्मिक पंथों की रूपरेखा 1786ई.-1860ई., बिशप कॉलेज प्रेस, कलकत्ता। पृष्ठ संख्या (148- 149)
6. अग्रवाल, डॉ. शुचि (2021) संस्कृत साहित्य में गुरू : एक विवेचन। IJSR जर्नल।
7. रणवा,मुकेश : 'बदलाव चेतना से लेकर चरित्र तक'।
8. मेघवाल, मांगीलाल एवं वर्मा,मदन- सांगलपति भजनावली।
9. तीर्थ, स्वामीशंकर पुरुषोत्तम (1992) योगवाणी: सिद्धयोग प्राप्ति के लिए निर्देश, न्यूयॉर्क: सतयुग प्रेस, पृष्ठ सं.27।
10. शास्त्री मुसलगांवकर, डॉ. राजेश्वर (संपादक : डॉ . सुरेश कुमार अवस्थी, 2011ई.) चौखंबा प्रकाशन, वाराणसी, पृष्ठ सं.26।

****